अनंत काबरा की साहित्यिक यात्रा

संपादन

डॉ. राजश्री मोरे

खंड १

Scanned with OKEN Scanner

अनंत काबरा
की साहित्यिक यात्रा

(खंड-१)

संपादन
डॉ. राजश्री मोरे

गीता प्रकाशन
हैदराबाद - लखनऊ - दिल्ली

Scanned with OKEN Scanner

इस साझा पुस्तक के प्रकाशन के बाद तत्संबंधित किसी भी प्रकार का विवाद या आलोचना उठती है तो उक्त लेख के रचनाकार कानूनी कार्यवाही के लिए उत्तरदायी होंगे। पुस्तक में संकलित लेखों के सर्वाधिकार रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। उनकी लिखित अनुमति के बिना किसी भी अंश की फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित, प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करण : 2022

सामग्री कॉपीराइट : संबंधित लेख के रचनाकार स्वयं

पुस्तक कॉपीराइट : डॉ. अनंत काबरा, डॉ. राजश्री मोरे

प्रकाशक : गीता प्रकाशन

4-2-771, रामकोट चौरस्ता,

हैदराबाद 500001 तेलंगाना भारत

सेल : 9849250784

geetaprakashan7@gmail.com

ISBN : 978-93-91934-38-5

Anant Kabra Ki Sahithik Yatra - 1

Editing : Dr. Rajshree More

Scanned with OKEN Scanner

अनंत काबरा कृत 'अटकलें' काव्य संग्रह : एक समीक्षा
- *पि. विजय कुमार* 256
डॉ अनंत काबरा की कविताओं में अध्यात्म – *राठोड गणेश* 262
डॉ अनंत काबरा के काव्य में नारी – *साकेवाड साईनाथ* 266
अनंत काबरा की कविताओं में स्त्री चेतना का स्वर
– *जयश्री संगु* 270
अनंत काबरा कृत 'समय की आड़ में' की कहानी
'बेटी' : एक समीक्षा - *युवराज धवन* 277
अनंत काबरा कृत काव्य संग्रह 'एक मलेक्ष कोरोना वाइरस'
का वाइरस - *बी. कार्तिकलाल* 280
अनंत काबरा कृत काव्य में दर्शन, अध्यात्म और धर्म
– *पी. सुधारानी* 283
अनंत काबरा की कविताओं में 'कोरोना वाइरस'
- *डॉ. श्याम गायकवाड़* 288
अनंत काबरा कृत 'समय की आड़ में' की कहानी
'प्रोफेसर शुक्ला' एक समीक्षा - *शिवाजी राठोड़* 294
अनंत काबरा कृत 'कारावासी अठारह दिन और वनवासी
चिंतन' काव्य संग्रह में कवि मन - *डॉ. राजाबाई* 300
अनंत काबरा की साहित्यिक यात्रा – *वी एन वी पद्मावती* 306
अनंत कावरा कृत 'योद्धा' काव्य संग्रह में समकालीन युगबोध,
मानवीय जीवन दर्शन और मूल्यों का अनुशीलन
- *हरदा राजेश कुमार* 308

Scanned with OKEN Scanner

अनंत कावरा की साहित्यिक यात्रा (खंड-१)
ISBN : 978-93-91934-38-5

अनंत काबरा की कविताओं में 'कोरोना वाइरस'

- डॉ. श्याम गायकवाड़

'कोरोना वाइरस' एक ऐसा नाम है जिसने पिछले २-३ सालों में इतना नाम कमा लिया कि इससे बूढ़े-बच्चे सब परिचित हो चुके। इसी कोरोना वाइरस ने हमारे साहित्य में भी पदार्पण किया, कई लेखकों ने इसे अपने लेखन के केंद्र में रख कई साहित्यिक कृतियों की रचना की, कई ने इसके नकारात्मक पहलू उजागर किए तो कई ने इसके प्रभावों का उल्लेख किया। पर एक बात अवश्य हुई कि पिछले २-३ सालों में साहित्यिक जगत में इस विषय पर कई पुस्तकों की भरमार पड़ गई। इसी बीच मेरी नज़र पड़ी डॉ. अनंत काबरा के काव्य संग्रह 'एक मलेक्ष कोरोना वाइरस' पर पहले तो मैंने इसे उठाने से भी परहेज किया पर जैसे ही मैंने इस पुस्तक के के विषय में अपने अन्य साथियों से सुना तो मैं सिर्फ इसकी कविताओं की एक झलक देखने पुस्तक को उठाया तो जैसे ही मैंने पुस्तक की भूमिका पठन की तो मेरा नज़रिया ही बदल गया, पुस्तक में सिर्फ कोरोना वाइरस को केंद्र पर न रखते हुए, इसकी उत्पत्ति का उल्लेख न करते हुए, इसकी उपचार विधि का विषय न बताते हुए हमारे आसपास उपलब्ध कोरोना वाइरस रुपी वातावरण को उकेरा गया है, इसके कारण और निवारण को बताया गया है।

आम भाषा के कवि के रूप में विख्यात डॉ अनंत काबरा की कविताओं की भाषा इतनी सरल, सहज और जनप्रिय शब्दों के समावेश से हुई है कि एक सरसरी निगाह में मैंने १०-१५ कविताओं को पढ़ लिया और सोचने लगा कि बेकार में यह कोरोना वाइरस बदनाम हो रहा है क्योंकि मानव के विचारों में जो वाइरस है, उसे कोई पहचानता नहीं इसी कारण वह दब कर, दुबक कर, पीठ पीछे वार कर रहा है और बदनाम कोई दूसरा ही

Scanned with OKEN Scanner

हो रहा है।

३३२ पृष्ठों के इस विशाल संग्रह में ३२४ कविताओं का समावेश किया गया है। जो कि ना केवल 'कोरोना' पर केंद्रित है बल्कि 'कोरोना' के इर्द-गिर्द के माहौल को भी दर्शाती है।

भूमिका में स्वयं कवि लिखते हैं कि "कोरोना की लहर में आ रही कहर, अपने रुकने की गिनती करना भूल गयी है, वह अपना चेहरा दिखा रही और हम अपना हौंसला उसे समझा रहे हैं। यह भी निश्तिक है जीत हमारी ही होगी, बस कुछ समय और धैर्य के साथ टीके रहने की आवश्यकता है, अपने अडिग विश्वासी कदमों के साथ।" इसी के बाद की पंक्तियों में स्वयं कवि लिखते हैं "श्मशाम अब तक रोई नहीं है, किसी की भी चिता पर और किसी की भी लाश पर, ना ही खुलकर हँसी है।" यहाँ इन पंक्तियों का विश्लेषण करें तो हम कह सकते हैं कि इस काल में इतने लोग स्वाहा हुए कि श्मशान तक अपने नियमों को भूल गया।

संबंधों को कोरोना से जोड़ते हुए कवि ने लिखा है कि "जिन्दा लोगों के बीच मरे हुए रिश्ते, दबती भावनाएँ, उफनती इच्छाएँ कोरोनाकाल की संक्रामक महामारी में इस बार वो सब कुछ कह गई है जिसे सदियां भी नहीं सुन पाई।" यह एक हकीकत है कि 'कोरोना' का तो सिर्फ नाम बदमान हुआ है, जबकि रिश्तों में तो संक्रमण पूर्व से ही लग चुके थे। मानव-मानव को देख कुड़ने लगा था कोई ना कोई कारण से वह एक-दूसरे से जलने लगा था।

समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निबाहते हुए कवि ने भूमिका के अंत में लिखा है- "कोरोना वायरस एक महामारी और संक्रामक बीमारी अवश्य है, यह उतनी घातक नहीं जितना उसका प्रचार और प्रसार किया गया यह एक सामान्य घटना है, परंतु हमने उसे विशेष संदर्भों के साथ जोड़ एक नए आकलन की प्रस्तुति देकर सभी को भयभीत वातावरण तैयार कर दिया उसे एक आक्रांता की तरह दिखा दिया..." इन पंक्तियों को पढ़ यही लगता है कि हर बार की तरह हमें धोखा में ही रखा गया था कुछ, हुआ कुछ पर पेश कुछ किया गया।

इसकी कविताओं की बात करें तो हम पाएंगे कि पुस्तक के शुरुआत

Scanned with OKEN Scanner

पर कवि ने सीधा प्रहर 'कोरोना' के जनक पर किया है. देखें-

"प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ में निकला
एक अवांछनीय देश
हमारा पड़ोसी राष्ट्र
विकास की परिक्रमा में
दूसरे देशों पर
अपना आधिपत्य जमाने
एक ऐसी चाल चल गया
जो मानवता को निगल जाती है..." पृ.७

यहाँ उपरोक्त पंक्तियों में यह स्पष्ट जाहिर हो रहा है कि कवि ने चीन पर तंज कसा जिसने 'कोरोना' के माध्यम से अपना जाल बुना जो अंत में मानवता को ही निगलने का साधन बन गया।

आगे कवि के शब्दों में देखें-

"मेरा सनातनी धर्म
इसकी गणितीय ज्ञान
भविष्य लेखन
आज से दस हजार वर्ष पहले ही
इस महामारी का नाम तक बतला गया
इसका संवत बता गया
पीड़ितों की संख्या गिना गया
कब तक रहेगी यह आपदा
इसका कालक्रम भी दिखला गया" पृ. ८

इस 'कोरोना' के बारे में हमारा इतिहास अभिन्न न था, जबकि कवि ने यह स्पष्ट कह दिया है कि हमारे गुरुओं अर्थात् पूर्वजों ने इसका उल्लेख हमारे ग्रंथों में १० हज़ार वर्ष पूर्व ही कर दिया थां, यहाँ तक की इसका नाम भी लिख दिया था और तो और इसकी आयु तक बतला दी थी। ग़र हम इतिहास के पन्नों को महत्व देते तो हम मानव समाज का इतना गहरा अहित न हुआ होता। हम अपने आपको इस संक्रमण के प्रति तैयार कर लिए होते, ख़ैर 'जब जागो तभी सबेरा' अब तो हमें अपने पूर्वजों का मान करना

Scanned with OKEN Scanner

सिखना होगा, उनके बताए बातों को महत्व देना होगा नहीं तो पुनः इसी तरह के अहितों को सहना होगा।

अपने भारत के लिए कवि ने कहा है-

"हम यूं ही
विश्वगुरू नहीं थे
हमारे पास
अतुल ज्ञान का भंडार
अपार संपदा का संसार" पृ. ८

हमारे भारत देश को इस विश्व में इसी ज्ञानरूपी संपदा के कारण 'विश्वगुरू' माना जाता है। पर अफसोस हम भारतीय ही इससे अवगत नहीं हैं। तभी तो हम इसे निजी स्वार्थ के लिए अंदर से खोखला कर रहे हैं।

आगे कवि ने लिखा है-

"दूसरी ओर
मवेशी राष्ट्र चीन
अपनी शक्ति बढ़ाता रहा
भीतर ही भीतर
अपना घेरा फैलाता रहा
एक बार लगने लगा
अमरिका, रूस जैसी बड़ी शक्तियाँ
टूट जाएगी
बिखर जाएगी" पृ. ११

जब समूचा विश्व 'कोरोना' संक्रमण से पीड़ित था तब वहीं इसका जनक मौका पाकर अपने आप को शक्तिशाली देश के रूप में उभारने के सपने देखने लगा था। इसी प्रयोजन के साथ उसने भीतर ही भीतर अपना घेरा भी फैला लिया था, जिसे देख विश्व ने सोचा कि अब अमरिका और रूस जैसे देश भी इसके आगे झुक जाएंगे.... मगर हुआ क्या, आगे कवि के शब्दों में ही पढ़ें-

"और सबकी दृष्टि में
मेरा भारत

Scanned with OKEN Scanner

एक आशा का दीप
बड़ी खामोशी से
टिमटिमाती बाती से
अपना मध्यम लौ प्रकाश फैलाता रहा
उठी नज़रें भी कहने लगीं
भारत ही एक राष्ट्र है
जो पुनः विश्वगुरू बन पाएगा
हर दुश्कर शक्ति का
समापन कर जाएगा'' पृ. ११

तभी भारत ने इस 'कोरोना' के ऊपर रिसर्च करना आरंभ किया एक ओर पीड़ितों को संभाल भी रहा था, दूसरी ओर निवारण की खोज भी कर रहा था, आशा की लौ जैसे ही जली, अन्य देशों की निगाह भी हमारी भारत पर टीकी और परिणाम हम सभी देख चुके हैं कि हमारे द्वारा निर्मित्त दवाईयाँ अमेरिका तक पहुंची है।

आगे कवि ने इस संक्रमण के प्रभाव जो हम मानवों पर पड़े के बार में उल्लेख किया कि-

''वक्त की नज़ाकत ने
हमें बहुत कुछ समझा दिया है
हम स्वयं को
उसमें ढ़ालने का प्रयास भी कर रहे हैं
जहाँ इच्छाओं के फूल भी खुलकर झर रहे हैं
क्यूंकि जीवन की मांग यही है
मरना कोई चाहता नहीं
सभी को मरने से भय लगता है
सभी जीना चाहते हैं
मरणासन्न से पूछो
वह भी जीने की वजह को बतलाने
अपनी अधूरी इच्छाओं को गिनाएगा'' पृ. ३१

यहाँ कवि ने उस काल के समय से हुए दुष्परिणामों के प्रभाव से

Scanned with OKEN Scanner

उभरने के लिए अपने शब्दों रुपी शक्ति को संचारित किया है। जिससे हम स्वयं को संभाल सकें।

यहाँ कवि ने व्यंग्य कसने में भी कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी, देखें-

"आरक्षण के कोटे से बने
डॉक्टर
जब भी चिकित्सा करेंगे
मरीज की जान को
खतरा ही रहेगा
कोरोना काल में
कितने ही रोगी
डॉक्टरों की लापरवाही के कारण
दुगुनी दवाईयों की खुराक के कारण
धन कमाने की लालच में
अपने प्राणों की बलि दे गए।" पृ. ८७

यहाँ उपरोक्त शब्दों के माध्यम से कवि न केवल व्यंग्य कसा है बल्कि सरकार द्वारा समाज के कुछ लिए उठाए कुछ नियमों पर भी कटाक्ष किया है जिसका परिणाम उन्हें भुगतना पड़ा। क्योंकि सरकार की कुछ ऐसी नीतियाँ जो बनती है हित के लिए पर होती है अहित के लिए का यहाँ खुलकर उल्लेख किया है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि डॉ. अनंत काबरा अपने सरल शब्दों के माध्यम से जटिल समस्याओं का भी परिचय अपने पाठकों से सहज ही करा जाते हैं और वह इससे होने वाले लाभ हानि का फैसला भी उन्हीं पर छोड़ जाते हैं।

- डॉ. श्याम गायकवाड़
अस्सिटेंट प्रोफेसर, हिंदी
बी आर बी महाविद्यालय, रायचूर - ५८४१०३ कर्नाटक
98861 14773

Scanned with OKEN Scanner